पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

SEMESTER –lll

CC-12

Unit-1 **TOPIC- -**

"ROLE OF ABRAHMAN LINCOLN''

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क 9430934482

सीसी 12 के इस यूनिट में मैंने पिछले 2 e-content में अमेरिकी क्रांति के कारण और उसके प्रभाव के बारे में चर्चा की थी। आज e-content के इस टॉपिक में अब्राहम लिंकन की भूमिका के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

रिपब्लिकन पार्टी की ओर से पहले और अमेरिका के 16 वे० राष्ट्रपति अब्राहम थॉमस लिंकन राष्ट्रपति बनने के पश्चात अमेरिका को वास्तविक रूप से "संयुक्त राज्य अमेरिका" के रूप में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल में ना केवल अमेरिका का आर्थिक विकास किया बल्कि दास प्रथा के मुद्दे को सुलझा कर अमेरिका को एकता के सूत्र में बांधा। इसी तरह उन्होंने अमेरिका में एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था भी कायम की जो जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा चलाया जा रहा था जिसका प्रभाव पूरे विश्व में देखने को मिलता है।

अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी 1809 ईसवी को एक अश्वेत परिवार में अमेरिका के Hodgenville, kentucky में हुआ था। इनके पिता का नाम थॉमस लिंकन तथा माता का नाम नैंसी लिंकन था। इन्होंने 1842 ईसवी में Mary Todd से विवाह किया था। अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति बनने के पहले एक वकील, एलियंस स्टेट के विधायक, अमेरिका के हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव के सदस्य थे ।दो बार सिनेट के चुनाव में भी असफल हो चुके थे। इसके बावजूद वे हताश नहीं हुए और उन्होंने राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर पहुंचने में सफलता अर्जित की।

अमेरिका में दशको से गुलामी की प्रथा की समस्या चल रही थी। गोरे लोग दक्षिणी राज्यों के बड़े खेतों के स्वामी थे और वे अफ्रीका से काले लोगों को अपने खेत में काम करने के लिए बुलाते थे और उन्हें दास के रूप में रखा जाता था । उत्तरी राज्यों के लोग गुलामी के इस प्रथा के खिलाफ थे । अब्राहम लिंकन को भी शुरू से गुलामों पर हो रहे अत्याचारों से सख्त नफरत थी और वे भी दास प्रथा को खत्म करना चाहते थे।

जब 28 जून 1860 ईसवी में रिपब्लिकन पार्टी के अध्यक्ष अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए तब उन्होंने अपने पार्टी के प्रमुख कार्यक्रम को लागू करने का काम किया। इस पार्टी के कार्यक्रम के कुछ प्रमुख मुद्दे थे:

1-छोटे काश्तकारों के लिए पश्चिमी इलाकों में उन्मुक्त जमीन;

2- ऊंची चुंगी दरें;

3-देश के

एक छोर से दूसरे छोर तक जाने वाली रेल लाइनों का निर्माण;

4-राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक और पूंजीवादी विकास; इत्यादि।

रिपब्लिकन पार्टी के उग्रवादी सदस्य कठोर उन्मूलन वादी दक्षिणवासियों के भावनाओं के घोर विरोधी थे । अतः जब लिंकन ने राष्ट्रपति का पद संभाला तब पृथकतावादी आंदोलन ने और जोर पकड़ लिया। सर्वप्रथम दक्षिणी कैरोलिना राज्य ने संघ से अलग होने की घोषणा कर दी और संघ का झंडा उतार दिया तथा उसके स्थान पर अपना स्वतंत्र झंडा फहरा दिया । इससे प्रेरणा पाकर अलबामा, फ्लोरिडा, मिसीसिपी, लुइसियाना , टेक्सास तथा जॉर्जिया भी संघ से पृथक हो गए ।ये सभी कपास उत्पादक दक्षिणी राज्य थे। जेफरसन डेविस की अध्यक्षता में इन राज्यों के द्वारा अपने एक नये महासंघ की स्थापना की घोषणा की गई । नए महासंघ में राज्यों के संप्रभुता के सिद्धांत को मान्यता दी गई थी। इस नए महासंघ का नाम दिया गया था - **Confederate States of America.** इन्हें अनौपचारिक रूप से **Rebel** अर्थात विद्रोही या **Dixie** भी कहा जाता था।(उतरी राज्यो को **union** कहा जाता था और इसे अनौपचारिक रूप से **Yankee** कहा जाता था)

इस प्रकार बरसों से जो आग भीतर ही भीतर सुलग रही थी वह अब ऊपर आ गई थी तथा उसकी लपटें चारों ओर फैलने लगी थी। अलग महासंघ की घोषणा से

उत्तरी राज्यों में पहले तो लोग अचंभित हुए। कुछ लोगों ने पृथक तवादियो का समर्थन भी इसलिए किया कि इससे कम से कम वे लोग तो चले गए जो दास प्रथा के समर्थक थे, किंतु संघ के झंडे को अपमानित किए जाने पर लोगों में भारी रोष था। राष्ट्रपति लिंकन संघ की एकता तथा अखंडता बनाए रखने के लिए कृत संकल्प थे चाहे इसके लिए कोई भी मूल क्यों ना चुकाना पड़े।

इन्हीं परिस्थितियों में अब्राहम लिंकन ने सर्वप्रथम अपनी सैन्य व्यवस्था को मजबूत किया।इन्होंने नए सैनिकों की भर्ती का तथा संघ के सिद्धांतों की रक्षा का आदेश दिया। नौसेना को मजबूत किया तथा उसे आधुनिक हथियार उपलब्ध करवाए गए । दक्षिणी राज्यों की जबरदस्त घेराबंदी की गई। दक्षिण के राज्यों के आयात निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।अंततः दक्षिणी राज्यों को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

इसमें संदेह नहीं कि दास प्रथा के मुद्दे को लेकर अमेरिकी समाज में काफी तनाव था। लिंकन दास प्रथा के उन्मूलन और उनकी स्वतंत्रता का पूर्ण हिमायती था। वह यह मानते थे कि आधे राज्यों में गुलामी की प्रथा नहीं रहे और आधे राज्यों में यह प्रथा बनी रहे, यह संघ के लिए खतरनाक है। वैसे उनका विश्वास था कि दास प्रथा बहुत दिनों तक रहने वाली नहीं थी । इस कारण गुलामों की संख्या में वृद्धि होने की आशंका नहीं थी। फलतः वह संविधान के प्रावधानों पर अटल रहा तथा ग्रह युद्ध होने पर उन्मूलन वादियों को इस पर निराशा हुई कि राष्ट्रपति ने गुलामों की मुक्ति के लिए नहीं बल्कि संघ की एकता बनाए रखने के लिए गृह युद्ध की घोषणा की थी। लिंकन ने एक बार कहा भी था कि दास्ता जिस स्थति में है, मैं उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। यदि मुझे सारे नैतिक अधिकार और शक्तियां भी प्राप्त हो जाए तो मैं यह नहीं जानना चाहूंगा कि मुझे दास प्रथा की इस स्थति का क्या उपयोग करना है। अमेरिका के कुछ लोगों का मानना है कि दासता के प्रश्न को लेकर अमेरिका में गृह युद्ध हुआ और दक्षिण के राज्य संघ से अलग हो गए किंतु वास्तविकता यह है कि लिंकन का मुख्य उद्देश्य संघ

की रक्षा करना था, चाहे जो भी हो दास प्रथा के समस्या का समाधान एक जनवरी 1863 ईस्वी की राष्ट्रपति लिंकन की "मुक्ति की घोषणा" से हुआ, जिसके अनुसार सब दास स्वतंत्र कर दिए गए और उन्हें राष्ट्रीय सेनाओं में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया।

अब्राहम लिंकन ने अपने शासनकाल में अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार देने का भी प्रयास किया। 1861 ईसवी में मोरिल परशुल्क अधिनियम पारित हुआ जिसके अनुसार नए-नए कर लगाए गए। 1862 ईस्वी के "वास भूमि अधिनियम" के अनुसार उन नागरिकों को 160 एकड़ सार्वजनिक भूमि अनुदान के रूप में दी गई जो कम से कम 5 वर्ष की अवधि के लिए उस पर रहने को तैयार हो। रेल मार्ग के निर्माण के लिए भूमि आवंटित की गई और सार्वजनिक कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए राज्यों को भी भूमि दी गई । एक पार महाद्वीपीय रेलमार्ग स्थापित किए जाने के बारे में बहुत दिनों से वाद विवाद चल रहा था 1862 ईसवी में कांग्रेस ने इसके निर्माण की स्वीकृति दी और तब संबंधित दो कंपनियों को यूनियन पैसेफिक और सेंट्रल पेसिफिक कंपनी को भूमि सहायकी (आर्थिक सहायता) और नगद ऋण दिए गए।

अब्राहम लिंकन ने राष्ट्रपति के अपने शासनकाल में जो कार्य किए उसी का परिणाम था कि जब 1864 ईस्वी में राष्ट्रपति का चुनाव हुआ तब रिपब्लिकन पार्टी ने राष्ट्रपति पद के लिए लिंकन को द्वारा नामित किया और टेनिसी के एंड्रयू जैक्सन को उसका चुनाव साथी बनाया। हालाकि रिपब्लिकन पार्टी के कुछ गरम पंथी सदस्य लिंकन को द्वारा नामित करना नहीं चाहते थे क्योंकि वे लिंकन के धीरे चलो वाली नीति से ऊब गए थे। जो भी जनता का समर्थन लिंकन को मिला और लिंकन डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार जनरल वी. मेक क्लेनन को हराकर द्वारा राष्ट्रपति बने। परंतु वे बहुत दिनों तक इस पद पर काम नहीं कर सके क्योंकि 14 अप्रैल 1865 ईस्वी को जॉन बिल्केस बूथ ने राष्ट्रपति लिंकन को गोली मारकर हत्या कर दी थी।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अमेरिका को संगठित रखने एवं संघ की एकता को बनाए रखने के लिए अब्राहम लिंकन ने जो कार्य किया वह सराहनीय है। उन्होंने ना केवल दास प्रथा को समाप्त किया बल्कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी एक मजबूत आधार प्रदान किया, जिसके परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे अमेरिका एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर सामने आया।

संदर्भ पुस्तक:

1- डॉक्टर किरण दातार - "अमेरिका का इतिहास"।

2-राघवेंद्र पाथरी एवं महेश विक्रम सिंह- "संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास"।

3-डॉक्टर बनारसी प्रसाद सक्सेना-"अमेरिका का इतिहास"।